अद्‌भुत परन्तु सत्य

लोग प्राय: ऐसी अद्‌भुत बातों को सुनने के लिए रुचि रखते हैं जो कि सत्य भी हों और विचित्र भी हों परंतु संसार में प्राय: जिन अद्भुत सत्यों की चर्चा होती है, वे ऐसे स्तर के नहीं होते कि जिनको सुनने से श्रोता का अपना जीवन अद्भुत बन जाए। किन्तु ऐसे भी अद्भुत सत्य हैं अवश्य जिनको जानकर न केवल अचंभा होता है और मन गद्‌गद् होता है बल्कि अपने जीवन में भी एक अद्भुत एवं अलौकिक परिवर्तन आ जाता है।

यहाँ हम जिस अद्भुत सत्य की बात सोचकर उपरोक्त वक्तव्य अंकित कर रहे हैं, वह प्रजापिता ब्रह्मा की अद्भुत एवं सत्य जीवन-कथा से संबंधित है। उनकी जीवन-कहानी को सुनते-सुनते न केवल ज्ञान-ध्यान एवं आचार-विचार के अद्भुत रहस्यों का बोध होता है बल्कि जीवन को एक नई दिशा भी मिलती है जिससे एक अद्भुत सुख की भी अनुभूति होती है।

अनुभवात्मक अद्भुत सत्य

बहुत-से लोगों के मन में प्राय: प्रश्न बना रहता है कि जैसे विज्ञान के सत्यों का प्रयोगशाला में परीक्षण हो सकता है, क्या वैसे आध्यात्मिक सत्यों का भी इस जीवन अथवा संसार की प्रयोगशाला में निरीक्षण-परीक्षण तथा अनुभवात्मक बोध हो सकता है? उदाहरण के तौर पर, जब चेतना शरीर को छोड़कर चली जाती है, तो उसके विषय में प्राय: यह कहा जाता है कि वह अपने संस्कारों को साथ ले जाती है और इसके बाद भी उसका अस्तित्व बना रहता है और वह पुन: शरीर का परिवेश लेती है या जीवन के किसी नये आयाम में पहुँच जाती है। जिज्ञासुजन सोचते हैं कि यह अद्भुत सत्य तो है परन्तु क्या विज्ञान के सत्यों की तरह इसका कोई प्रमाण भी है? देह छोड़ने के बाद कोई आत्मा कहाँ गई – इसका कोई अता-पता भी है? क्या किसी ने कभी लौटकर बताया भी है? हमने ऊपर ब्रह्मा बाबा की जिस अमरकथा की बात कही है, वह एक ऐसी ही कोटि का अद्भुत सत्य है जिसकी प्रामाणिकता हज़ारों-लाखों लोगों की अनुभूति रूपी प्रयोगशाला में प्रत्यक्ष अथवा साक्षात् सत्य की तरह है।

इस जीवन-कथा में आद्‌भुत्य क्या है?

बात की शुरूआत इस प्रकार है कि सन् 1936 में दादा लेखराज नाम के एक सुप्रसिद्ध जवाहरी थे जो कि दिनोंदिन अधिकाधिक भाव-भीनी भक्ति में लीन रहने लगे थे। अनायास ही उन्हें ज्योतिर्बिन्दु परमपिता परमात्मा शिव का, आत्मा के पारलौकिक स्वरूप का, उसके आवागमन के चक्र का, नई सतयुगी सृष्टि की पुनर्स्थापना का तथा कलियुगी सृष्टि के भयंकर महाविनाश इत्यादि का भी साक्षात्कार हुआ। उन साक्षात्कारों का इतिहास अनोखा है और उनके फलस्वरूप जो रहस्य उद्‌घाटित हुए, वे भी अनोखे हैं। तब से पिताश्री के जीवन में परिवर्तनों की ऐसी कड़ी प्रारंभ हुई जिससे न केवल उन्होंने अपना सर्वस्व प्रभु-समर्पित कर जन-जन की आध्यात्मिक सेवा में लगा दिया बल्कि वे सही मायनों में सतयुग के प्रवर्त्तक और नई सृष्टि के निर्माण में ईश्वरीय माध्यम बन गए और उनका अनुपम त्याग, उनकी सतत् तपस्या और अथक सेवा फलीभूत हुए। वे न केवल स्वयं दिव्य गुणों की एक चेतन मूर्ति बने बल्कि उन्होंने हज़ारों को दिव्य गुणों के लिए प्रेरित किया और प्रभु से उनके मन का नाता जोड़ा। उनके साथ ही अनेकानेक का आध्यात्मिक दृष्टि से कायाकल्प हुआ। इस कार्यकाल (1936-69) में उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की स्थापना करके उसे एक ऐसा दिव्य रूप दिया कि आज यह सभी महाद्वीपों

में 137 देशों में, 8500 से भी अधिक स्थानों पर जन-जन के जीवन को अध्यात्म से आलोकित कर रहा है और विश्व-परिवर्तन की अद्भुत प्रक्रिया को तीव्र गति से आगे बढ़ा रहा है।

अव्यक्त आरोहण की अद्भुत वार्ता

इस अमरकथा का एक अविस्मरणीय अद्भुत सत्य यह है कि 18 जनवरी, 1969 की रात्रि को, माउंट आबू (राजस्थान) में उपस्थित सभा को संबोधित करने के बाद, वे अपने विश्राम स्थल पर लौटे और वहाँ आकर उन्होंने देह रूपी कलेवर को छोड़ दिया। उनका आत्मा रूपी हंस अव्यक्त लोक की ओर उड़ चला। तब से लेकर वे परमपिता शिव के साथ अव्यक्त अर्थात् सूक्ष्म प्रकाशमय ब्रह्मा के रूप में न केवल अव्यक्त रीति से विश्व-परिवर्तन में कार्यरत हैं बल्कि वे इस मानव-सृष्टि में एक मानवीय माध्यम के द्वारा ज्ञान, योग, आचार एवं व्यवहार के तथा संसार के आदि-मध्य-अंत एवं आगम-निगम के मर्मभेदी सत्यों को भी स्पष्ट करते रहते हैं। वे सत्य नवीन हैं, आश्चर्यवत् हैं परन्तु विवेक-सम्मत हैं।

अद्भुत महावाक्य

परमपिता परमात्मा ज्योतिर्बिन्दु शिव तथा अव्यक्त ब्रह्मा के महावाक्यों के जो संकलन किये गए हैं, उनके निष्पक्ष और गुणग्राही अध्ययन से कोई भी अध्यात्म-प्रेमी व्यक्ति यह निष्कर्ष लिए बिना नहीं रहेगा कि ये महावाक्य उन्हीं के हो सकते हैं जो पूर्णत: पावन हों, आध्यात्मिक स्थिति में एकरस हों, अपवाद-रहित सभी गुणों के अतुल भंडार हों और जिनमें ऐसी करुणा और ऐसी वैश्विक कल्याण-भावना हो कि वे संसार-सागर में, विषय-विकारों के भँवर में फँसी हुई मनुष्य आत्माओं को तारने और पार लगाने की सहायता देने में विश्व-परिवर्तन की सेवा में दिन-रात तत्पर हों। उन महावाक्यों को पढ़ने और सुनने से, मुख से स्वत: ही, सहज ही और निष्प्रयत्न रूप से ही यही शब्द निस्सृत होते हैं कि 'ये सत्य हैं, कल्याणकारी हैं, अति सुन्दर हैं और मानव जीवन के परम लक्ष्य तक ले जाने वाली एक अभीष्ट नाव की तरह हैं जिसकी चिरातीत से खोज थी।' जीवन एवं व्यवहार की प्रयोगशाला में भी वे सत्य सिद्ध होते हैं और विवेक की कसौटी पर भी पूरे उतरते हैं। वे आत्मा को योग-स्थित बना देते हैं, एक अपूर्व आनन्द का अनुभव कराते हैं, उसमें एक आंतरिक सुख का सार भर देते हैं और व्यवहार में गुणों की सुगन्धि की छटा छलका देते हैं। अत: 'इदं इत्थं' के शब्द अभी ही मुख से निकलते हैं।

अद्भुत प्रसंग

प्रसंग की एक अद्भुत बात यह है कि कितने ही जन ऐसे हैं जिन्होंने अव्यक्त ब्रह्मा का पहले से ही दिव्य साक्षात्कार किया और बाद में जब वे इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संपर्क में आए, तब उन्होंने बताया कि उन्होंने पहले इनका साक्षात्कार किया था। कितने ही नर-नारी ऐसे हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से उनसे व्यक्तिगत मार्ग प्रदर्शना ली और उनके वात्सल्य का अनुभव किया। अत: अब यह नहीं कहा जा सकता कि शरीर छोड़ने के बाद ब्रह्मा बाबा की आत्मा कहाँ गई, उसका अता-पता क्या है?

धर्म-ग्रंथों में अव्यक्त ब्रह्मा का उल्लेख

शास्त्र शिरोमणि श्रीमद्भगवद्गीता में 'अव्यक्त ब्रह्मा' का उल्लेख मिलता है तथा विश्व के अन्य मुख्य धर्मों में, भाषान्तर में अन्य नामों से भी उनका अति संक्षिप्त उल्लेख मिलता है। परन्तु यज्ञ-पिता अथवा प्रजापिता ब्रह्मा में तथा अव्यक्त ब्रह्मा में क्या अन्तर है तथा क्या सामंजस्य है – इसका सत्य बोध भाषा, शब्दकोष, व्याकरण तथा तत्व-शास्त्र अथवा तर्क-शास्त्र से नहीं हो सकता बल्कि यह तो दिव्य बुद्धि और दिव्य दृष्टि से ही जाना जा सकता

है। यह तो प्रभु-कृपा ही का फल अथवा प्रसाद हो सकता है और अब ही वह घड़ी है जब सबको ये सहज उपलब्ध हो सकता है। शास्त्रों में मुक्ति और जीवनमुक्ति का उल्लेख तो आत्माओं के प्रसंग में काफी हुआ है परन्तु अव्यक्त लोक में अव्यक्त अस्तित्व की चर्चा ब्रह्मा ही के प्रसंग में हुई और साथ-साथ ब्रह्मा को, ब्राह्मणों आदि के अधिपति के रूप में भी दिखाया गया है। इन दोनों स्वरूपों के विचित्र समन्वय का बोध भी अभी हो सकता है।

ब्रह्मा की अद्भुत जीवन-कथा का ज्ञान जरूरी

विश्व में एकता तथा सद्भावना का एक मूल सूत्र यह है कि हम सब आत्मिक रूप से एक परमपिता परमात्मा की संतति हैं और मानव देह में होने की दृष्टि से प्रजापिता ब्रह्मा, एडम अथवा आदम की संतान होने के नाते सब 'भाई-भाई' हैं और यह सारा विश्व हमारा ही एक कुटुम्ब है। 'विश्व-भ्रातृत्व' की इस धारणा के बिना समाज में नैतिकता का ढाँचा या तो ध्वस्त हो जाता है या कमज़ोर होने से भयप्रद बना रहता है परन्तु प्रजापिता ब्रह्मा की जीवन कहानी क्या है? शास्त्रों में तो केवल इतना ही कह दिया है कि सागर में शेष-शय्या पर विश्रामी विष्णु की कमल-नाभी से ब्रह्मा प्रकट हुए अथवा कि 'गाड(God)' ने मिट्टी से आदम का बुत बनाया परन्तु इसका रहस्य क्या है, उसको जानने का अब ही स्वर्णिम सुअवसर है। क्योंकि जैसे पिता अपने पुत्रों को अपनी जीवन-कथा अथवा कुटुम्ब-कथा सुनाता है, वैसे ही यह अद्भुत कथा पिताश्री ब्रह्मा के मुखारविंद से हमें सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिसके भागीदार हम आपको भी और अन्य सभी को भी बनाना चाहते हैं।

'ब्रह्मा ने मुख से ज्ञान दिया, ब्रह्मा ने संकल्प से सृष्टि रची, कल्प के अंत में सृष्टि का महाविनाश होने पर सब आत्माएँ अव्यक्त ब्रह्मा के पास जाएँगी' – ज्ञान की इन गूढ़ बातों का अथवा कूट वचनों का अर्थ, अनुभवजन्य ज्ञान द्वारा ही ग्रहण हो सकता है। इनका बोध भी अब ही हुआ है क्योंकि, कोई माने या न माने, अब प्रजापिता ब्रह्मा और परमपिता शिव युग्म रूप से पुन: नई सतयुगी अथवा देव-सृष्टि की स्थापना कर रहे हैं और अब भी सैकड़ों-हज़ारों लोग इस प्रक्रिया से प्रेरित, प्रभावित, परिवर्तित और पुनीतकृत हो रहे हैं। यह दृश्य भी देखने और समझने जैसा है और अपनी ही प्रकार का एक अद्भुत सत्य है। इससे वंचित रहना एक अत्यंत सौभाग्य से वंचित रहना है।